असली और नक़ली पीर में फ़र्क़

*"लिबास-ए-खिज़्र में यहाँ हज़ारों रहज़न भी फिरते हैं
अगर जीने की तमन्ना है तो कुछ पहचान पैदा कर"*

मुसन्निफ़

मुफ़्ती फ़ैज़ अहमद ओवैसी

मुतर्जिम :

सूफ़ी अनवर रज़ा खान क़ादरी

GKR Digital PUBLISHER

GKR Digital Publisher

About Publisher

GKR (Ghaus o Khwaja o Raza) Digital Publisher ek Sunni Islamic digital publishing platform hai jo Islami kitaabon aur taleemaat ko nayi soch aur updated andaz me logon tak pahuchane ka kaam karta hai. Yah platform khas kar Islami kitaabon ko **Hindi aur Roman** script me translate karta hai, taaki ilm-e-deen (Islamic knowledge) ko aam logon aur khaas tabqe (awam aur khwas) tak asaan aur samajhne layak format me pesh kiya ja sake.





Join Team Member

Agar aap GKR ke saath judna chahte hain ya is platform ke zariye koi kitaab Translate/publish karana chahte hain, to yah ek behtareen moka hai ilm-e-deen ko doosron tak pahunchaane ka.

Founder :
Writer | Translator | Creator | Designer | Composer
Sufi Anwar Raza Khan Qadri
9534124663 (GP/Phone)
(Mureede Tajush Sharia)
Ba Faize Roohani Huzoor Khawaja Garib Nawaz

www.ghausokhwajaorazatrust.com

Donate to Islam

Anwar Khan

Indian Bank 8894

किताब नाम	:	"असली व नक़ली पीर में फ़र्क़"
मुसन्निफ़	:	अल्लामा मुफ़्ती फैज़ अहमद ओवैसी
भाषाः	:	हिन्दी
मुतर्जिम	:	सूफ़ी अनवर रज़ा खान क़ादरी
कैटेगरी	:	तसव्वुफ़
कंपोज़िंग और डिज़ाइनिंगः	:	सूफ़ी अनवर रज़ा खान क़ादरी
PDF	:	GKR Digital Publisher
साल	:	**जून** 2025 (1446 हिजरी)
पेज	:	43

हम्द व सना

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तमाम तारीफें अल्लाह के लिए

- जो 1 माबूदे हक़ीक़ी है ।उसका कोई शरीक नहीं, न ज़ात में, न सिफ़ात में, न अफ़आल (काम) में, न अहकाम में, न अस्मा में
- जिसने अपनी क़ुदरत से हमे तमाम मख्लूको से सबसे अफ़ज़ल यानी इंसान बनाया
- जिसने अपने फ़ज़्लों करम से हमे तमाम उम्मतियो से अफ़ज़ल अपने हबीब के उम्मत यानी मुसलमान बनाया
- जिसने अपने रहमो करम से हमे इस उम्मत के 73 वां फिरका यानी सुन्नी बनाया।
- जिसने दौर के मुताबिक अपने वली हुज़ूर आला हज़रत के जरिये हमे सुन्नियों में अफज़ल यानी बरैलवी बनाया।
- तमाम तारीफें उस ज़ात के लिए है जिसके लिए हम बरैलवी हक़ वालो से महब्बत और बातिल फ़िरकों का रद्द करते है।
- दरूद व सलाम हो उस नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जिसे तूने अपनी नूर की तजल्ली से बनाया और सारे जहां के लिए रहमत बनाकर हम गुनहगार उम्मतियों का नबी बनाया व सलामती हो असहाब पर और नबी के आल पर और सलामती हो उन तमाम मोमिन मोमिनात पर जिन्होंने तुझे राज़ी किया।

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

अर्ज़-ए-मुतर्जिम

अल्हम्दुलिल्लाह! रब्ब-उल-आलमीन का शुक्र अदा करते हुए इस किताब के हवाले से कुछ गुज़ारिशात पेश-ख़िदमत हैं। इस किताब की हिन्दी तर्जुमा करने का मक़सद मौजूदा दौर में लोगों को हक़ और सच्चाई की रोशनी दिखाना और धोखादेही व गुमराही से बचाना है।

मौजूदा ज़माने में रूहानी रहनुमाओं के किरदार को समझना एक अहम ज़रूरत बन चुका है। अफ़सोस के साथ कहना पड़ता है कि बहुत से लोग दीन और रूहानी तरबियत के नाम पर सादा लोह अवाम को गुमराह कर रहे हैं। इन हालात में हक़ और बातिल के दरमियान फ़र्क़ वाज़ेह करना हर साहिब-ए-इल्म का फ़र्ज़ बनता है।

यह किताब इस नियत से लिखी गई है कि लोग असली और नक़ली पीर के दरमियान फ़र्क़ को समझ सकें और अपनी रूहानी तरबियत के लिए सही रहनुमा का इंतख़ाब कर सकें। कोशिश की गई है कि बात को आसान और आम फ़हम अंदाज़ में पेश किया जाए ताकि हर शख़्स इससे इस्तिफ़ादा कर सके।

दुआएँ और उम्मीदें:

मेरी दुआ है कि यह किताब क़ारिओं के दिलों में हक़ को समझने की रोशनी पैदा करे और उनके लिए नेक आमाल की तरफ़ रहनुमाई का ज़रिया बने। अल्लाह तआला से दुआ है कि इस काम को कुबूल फ़रमाए और इसे मेरे लिए और क़ारीइन के लिए ज़रिया-ए-निजात बनाए।

अर्ज़-ए-ख़ास:

क़ारीइन से दरख़्वास्त है कि अगर इस किताब में किसी भी क़िस्म की ग़लती नज़र आए तो मुझे आगाह करें ताकि इंदा इसकी इस्लाह की जा सके। हर नसीहत और मशवरा मेरे लिए बाइस-ए-रहनुमाई होगा।

वस्सलाम,

मुतर्जिम

सूफ़ी अनवर रज़ा ख़ान क़ादरी

(मुरीद-ए-ताजुश्शरीआ)

Writer / Translator / Creator / Designer / Composer

राँची, झारखण्ड (इण्डिया)

बानी : ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा ट्रस्ट

असली और नक़ली पीर में फर्क (अज़ मुतर्जिम)

मौजूदा दौर में पीर और रूहानी रहनुमाओं का किरदार एक नाज़ुक और अहम मौज़ू है। हकीकि पीर और नक़ली पीर में फर्क करना ज़रूरी है ताकि लोग धोखा और गुमराही से बच सकें। नीचे दिए गए नुक़्ते मौजूदा दौर के तनज़्ज़ुर में असली और नक़ली पीर के फर्क को वाज़ेह करते हैं:

"लिबास-ए-खिज़्र में यहाँ हज़ारों रहज़न भी फिरते हैं,
अगर जीने की तमन्ना है तो कुछ पहचान पैदा कर"

1. इल्म और तक़्वा:

असली पीर:	*नक़ली पीर:*
✓ *कुरआन-ओ-सुन्नत का गहरा इल्म रखते हैं और उस पर अमल करते हैं।*	☒ *दीन का वाजिब या नाक़िस इल्म रखते हैं, अक्सर दिखावे के लिए दीन का सहारा लेते हैं।*
✓ *उनकी ज़िंदगी में अज्ज़ी, तक़्वा और ख़ुदा-ख़ौफ़ी नज़र आती है।*	☒ *अपनी ज़ात की बड़ाई और शोहरत के लिए लोगों को मुतास्सिर करते हैं*
✓ *वो दीन को समझने और फैलाने की नीयत से लोगों की रहनुमाई करते हैं।*	☒ *वो दीन के नाम पर दुनिया कमाने की नीयत से मरीद करते है।*

2. अमल और अख़्लाक़:

असली पीर:	*नक़ली पीर:*
✓ *क़ौल-ओ-फ़ेल में मुताबिक़त होती है और दूसरों को भी नेकी का दर्स देते हैं।*	☒ *दूसरों को नेक अमल की तलक़ीन करते हैं, मगर ख़ुद उन पर अमल नहीं करते।*
✓ *उनका रवैया नरम,मुश्फ़िक़ाना*	☒ *बदअख़्लाक़ी, गुस्सा और धोखा*

और बा-अख़्लाक़ होता है।	*देना जैसे रवैये इख़्तियार करते हैं।*

3. माल-ओ-दौलत की तलब:

असली पीर:	**नक़ली पीर:**
✓ *दुनियावी माल-ओ-दौलत से बे-नियाज़ होते हैं और सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए काम करते हैं।* ✓ *लोगों से सिर्फ़ उनकी रूहानी तरक़्क़ी के लिए ताल्लुक़ रखते हैं।*	☒ *माल-ओ-दौलत के हरीस होते हैं और लोगों से पैसा बटोरने के लिए मुख़्तलिफ़ तरीक़े अपनाते हैं।* ☒ *जाली तावीज़, अमलियात और दूसरी धोखाधड़ी के ज़रिए अपनी जेब भरते हैं।*

4. अक़ीदत व अमल :

असली पीर:	**नक़ली पीर:**
✓ *शरीअत और सुन्नत के मुताबिक़ रहनुमाई करते हैं।* ✓ *किसी ग़ैर-शरई अमल या बिदअत को फरोघ नहीं देते।*	☒ *ख़ुराफ़ात, बिदअत और सुलहकुल्लियत जैसे कामों को फरोघ देते हैं।* ☒ *लोगों को ग़लत वादों और तोहमत में उलझाकर गुमराह करते हैं।*

5. लोगों पर असर:

असली पीर:	**नक़ली पीर:**
✓ *लोगों की रूहानी तरबियत करते*	☒ *लोगों को झूठे वादों और ख़ौफ़*

हैं और उन्हें अल्लाह से जोड़ने की कोशिश करते हैं। ✓ *उनकी सोहबत से इंसान की ज़िंदगी में मुसबत तब्दीली आती है।*	*के ज़रिए क़ाबू में रखते हैं।* ☒ *उनकी सोहबत इंसान की दुनियावी और दीनी ज़िंदगी दोनों को खराब कर सकती है।*

नतीजा:

असली पीर वो हैं जो अल्लाह और उसके रसूल ﷺ की तालीमात के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते हैं और दूसरों को भी सीधे रास्ते पर लाने की कोशिश करते हैं। नक़ली पीर दीन के नाम पर लोगों को गुमराह करते हैं और अपनी दुनियावी ख़्वाहिशात पूरी करते हैं। हर मुसलमान को चाहिए कि वो इल्म और तहक़ीक़ की बुनियाद पर अपने रूहानी रहनुमा का इंतख़ाब करे और धोखे से बचे।

यहाँ तक मुख़्तसर "असली पीर और नक़ली पीर में फर्क" मुतर्जिम (सूफ़ी अनवर रज़ा खान की) की जानिब से है।

यहाँ से असल किताब की शुरूआत

पेशे लफ्ज़

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

फ़क़ीर अर्सा से ग़लत क़िस्म के पीर-फ़क़ीर से मसरूफे जिहाद है, लेकिन अफ़सोस कि मेरी सुन्नी बिरादरी मेरे साथ ताअवुन के बजाय उल्टा ग़लत क़िस्म के पीर-फ़क़ीर का साथ देते हुए इस फ़क़ीर से मुख़ालिफ़त बल्कि एज़ियत रसानी तक नौबत पहुंचाती हैं, लेकिन गदागर का काम है खैरात लेता है।

बरादरान, सगां कम निकांद रिज़्क गढ़ा।

फ़क़ीर सदा लगा रहा है, उम्मीद है कि यह सदा अस-सहरा असीबत न होगी, इंशाअल्लाह यह आवाज़ कभी सूर-ए इस्राफील बन जाएगी।

अल्हम्दुलिल्लाह, इसका अगाज़ मौलाना हाफिज़ अब्दुल करीम साहिब कादरी रज़वी, खतीब जामी मस्जिद हैदरी, दरगाह सैयद मुहम्मद शाह दूल्हा सब्ज़वारी कुन्दी वाला तख़री अलैहुर रहमान, खार और कराची, फरमा रहे हैं। उम्मीद है इसका अगाज़ एक बा-अमल आलिम और बेहतरीन खादिम-ए दीन से हो रहा है तो दिन ब दिन यह तहरीक ज़ोर पकड़ेगी कि अवाम बल्कि ख़्वास लोग जाहिल पीर और बे-अमल गद्दी नशीनों को या तो राह-ए रास्त पर ला सकेंगे या उनसे बेज़ार हो जाएंगे। यही हमारा मक़सद-ए अव्वल है।

अबू अस-सालेह मुहम्मद फैज़ अहमद ओवैसी ग़ुफ्रल्लाह।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहु व नुसल्ली व नुसल्लिम अला रसूलिहिल करीम।

अम्मा बाद,

दौर-ए हाज़िर में जैसे दूसरे उमूर में नक़्ल का ग़लबा है, ऐसे ही शोबा-ए पीरी-मुरीदी में भी नक़्ल का ज़ोर है। इसलिए यह रिसाला **"असली व नक़ली पीर में फर्क"** नाज़रीन की ख़िदमत में पेश कर रहा हूं। इससे किसी पर तअन-ओ-तश्नी मक़सूद नहीं, बल्के अवामे अहले इस्लाम को आगाही मक़सूद है कि जिस तरह वो अपने दुनियावी उमूर में असली व नक़ली की पहचान करके असली खरीदते हैं, ऐसे ही पीरी-मुरीदी में भी असली व नक़ली पीर की पहचान करें। क्योंकि नक़ली पीर खुद गुमराह है।

''अंकेह खुद गुम है, करा रहबरी कुनद"

"जो खुद गुम है, दूसरों की खाक रहबरी करेगा"। बल्के जब उसके करतूत आमाल, अक़्वाल, यानी गुफ्तार, रफ्तार, किरदार उसे जहन्नुम में ले जाने वाले हैं तो वह दूसरों की निजात कहां से लाएगा? इसीलिए मौलाना रूमी कुद्दिसा सिर्रुह ने खूब फ़रमाया है:

"गर इनअस्त लानत बर वली"

अगर वली (उसी चेले शैतानी का नाम है) तो ऐसे वली पर लानत।

फ़क़ीर इस तसनीफ में असली और नक़ली पीरों की फेहरिस्त पेश करता है और असली पीरों के वो इरशादात जो उन्होंने रहती दुनिया तक जमा मुरीदों को हिदायत के तौर पर फरमाए हैं, नक़ल करके नक़ली पीरों के मुताल्लिक़ चंद उसूल अर्ज़ करके उनके चंद एक वाक़ियात अर्ज़ करेगा। इसके बावजूद फिर भी कोई नक़ली पीर को नहीं छोड़ेगा तो वह दुनिया में तो ज़िल्लत-ओ-ख़्वारी उठा रहा है कि खुदा त'आला के मग़ज़ूब बंदे का ग़ुलाम बे-दम है। आख़िरत में और ज़्यादा होगा जब असली पीरों

के मुरीदीन बहिश्त की राह लेंगे और ये नक़ली पीर के साथ जहन्नम का इंधन बनेगा|

असली पीर:

वो थे (असहाब-ए कह्फ, उसी तरह से उम्मत-ए हबीब अल्लाह में उनसे बढ़ कर) कुत्ता उनकी सोहबत में आया, बहिश्ती बन गया|

नक़ली पीर:

कनआन बिन नूह अलैहिस्सलाम के ख़ानदान-ए नबूवत में पैदा होने और नबी-ज़ादा होने के बावजूद हज़ारों ताबेदारों के साथ जहन्नम में जाएगा| अगर आज पीरज़ादे ग़लत अक़ाइद और गंदे करतूत में मलविस हैं तो फिर कोई जाहिल मुरीदान के साथ जहन्नम में जाना चाहता है तो हम क्या कर सकते हैं|

असली पीरान-ए आज़म की फेहरिस्त:

1. हज़रत सैयद आलम, हुज़ूर मुहम्मद मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने एक लाख या दो लाख चौबीस हज़ार या कम ओ बेश अंबिया, मलाइका, और सहाबा की इज़्ज़त फरमाई|

जमीन और आसमान के तमाम मख़्लूक़ात और एक लाख चौबीस हज़ार सहाबा कराम (कम ओ बेश) और तमाम मुसलमान ता क़यामत|

2. तमाम सहाबा, बिलख़सूस खुलफा-ए राशिदीन, ताबिईन (रदियल्लाहु अन्हुम)|

3. सैयदना अली अल-मुर्तज़ा (रदियल्लाहु अन्हु) के मुरीद सैयदना हसन बसरी (रदियल्लाहु अन्हु) और जमाअत सलासिल-ए तय्यिबा: कादिरिया, चिश्तिया, सुहरावर्दिया|

4. सैयदना ओवैस क़र्नी (रदियल्लाहु अन्हु) के मुरीद सिलसिला-ए ओवैसिया के जमाअत और औलिया कराम|

5. सैयदना गौस-ए आज़म, शेख अब्दुल कादिर जिलानी (क़द्दसल्लाहु सिर्रुह), सिलसिला-ए कादिरिया के शाहंशाह।

6. सैयदना मोइनुद्दीन अजमेरी (रहमतुल्लाह अलैह), सिलसिला-ए चिश्तिया, जिसमें ख्वाजा क़ुत्बुद्दीन, ख्वाजा फरीदुद्दीन, ख्वाजा साबिर, ख्वाजा निज़ामुद्दीन (रहमतुल्लाह अलैहिम) शामिल हैं।

7. हज़रत ख्वाजा शहाबुद्दीन, सिलसिला-ए सुहरावर्दिया, जिसमें गौस-ए यमा अल-हक़, उमर सुहरावर्दी (क़द्दसल्लाहु सिर्रुह), शेख सादी, सैयद जलालुद्दीन (रहमतुल्लाह अलैहिम) शामिल हैं।

8. ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबंद (क़द्दसल्लाहु सिर्रुह), सिलसिला-ए नक्शबंदिया, जिसमें हज़रत बाक़ी बिल्लाह, हज़रत मुजद्दिद अल्फ़ सानी, हज़रत जामी (रहमतुल्लाह अलैहिम) शामिल हैं।

असली और सच्चे पीरों की फेहरिस्त इतनी तवील है कि लिखते लिखते दरख़्त-ए क़लम दर याद समंदर सियाही हो, तब भी ये ख़त्म हो जाएंगे, लेकिन उनके अस्मा-ए ग़रामी ख़त्म नहीं होंगे।

खुलासा यह हुआ कि:

असली पीरान-ए आज़म की खारी और सच्ची निशानी रसूल-ए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शरीअत और सुन्नत की पैरवी है। अगर इसके खिलाफ है तो समझो वह शैतान का खिलौना है, ख्वाह वह आसमान पर उड़े और दरिया में चले वग़ैरा। क्योंकि विलायत का मिआर करामत का सुदूर नहीं, बल्के शरीअत व सुन्नत की पैरवी है।

तरीक़ए मुस्तफा को छोड़ना है वजहे बर्बादी

इसी से दुनिया में क़ौम हुई बे-ईक़्तेदार अपनी

रसूल-ए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शरीअत व सुन्नत के खिलाफ जो भी है, वह कभी मंज़िल-ए मक़सूद को नहीं पहुंचेगा।

असली पीरान-ए कराम:

वही हैं जो रसूल-ए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सुन्नत व शरीअत के पाबंद हैं। हदीस व फ़िक़्ह की किताबों में तसरीहात मौजूद हैं। हम यहां सहाबा कराम (रदियल्लाहु अन्हुम) के वो नमूने अर्ज़ करते हैं जो उनके इत्तिबा-ए सुन्नत के इंसाक पर दलालत करते हैं।

सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम का इत्तिबा-ए नबी में इन्हिमाक:

1. नसीम अल-रियाज़, सफा 337, जिल्द 3 में इमाम अहमद बिन हंबल और बज़ार से ब-सनद सहीह मज़कूर है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रदियल्लाहु अन्हुमा) ने अपनी ऊंटनी को (जिस पर सवार थे) एक मकान में घुमाया। आप से सवाल हुआ कि आपने ऐसा क्यों किया? तो फ़रमाया: **मुझे वजह नहीं मालूम, मगर यह कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ऐसा करते देखा था, इसलिए मैंने भी ऐसा किया।)**

2. मिश्कात अल-मसाबीह, बाब अल-दआवात फी अल-अवक़ात, सफा 214 में है कि हज़रत अली (रदियल्लाहु अन्हु) को एक चोपाया सवार होने के लिए दिया गया। जब आपने रकाब-ए मुबारक में क़दम रखा, "बिस्मिल्लाह" कहा, और जब सवार हुए, "अल्हम्दुलिल्लाह" कहा। फिर पढ़ा: "सुब्हानल्लाज़ी सख़्ख़रा लना हज़ा।" फिर तीन बार "अल्हम्दुलिल्लाह," तीन बार "अल्लाहु अकबर," और तीन बार **"सुब्हानका इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी फ़ग़फ़िरली"** पढ़ा। फिर आपने अर्ज़ की गई: "या अमीर अल-मोमिनीन, आप क्यों हंसते हैं?"

आपने फ़रमाया: "मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को देखा था कि आपने इसी तरह किया था, जिस तरह मैंने किया है।"

3. मिश्कात अल-मसाबीह, सफा 149 में है कि हुज़ूर-ए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इस पत्थर की तरफ खड़े हुए और अपने दोनों बाजू को कपड़े से ज़ाहिर किया। मतलब कहते हैं कि मुझे उसने

कहा, जिसने रसूल-ए पाक (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से मुझे ख़बर दी थी, कि **"काअन्नी अन्ज़ुरु इला बयाज़ ज़रअई रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हीन हसरा अन्हुमा, थुम्मा हमलाहा फा वज़ाअहा इंदा रसीही।"** (गोया मैं हुज़ूर के दोनों बाज़ू की सफ़ेदी को अब देख रहा हूं, जैसे कि आपने उनसे कपड़े को हटाया था।) फिर आपने इस पत्थर को उनके सर के करीब रख दिया।

(4) खफ़ाजी और शरह शिफ़ा मुल्ला अली क़ारी, पेज 330, जिल्द 3 में हवाला मुवत्ता इमाम मालिक, नसाई और इब्न माजा ज़िक्र है कि हज़रत अब्दुल्लाह इब्न उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, "हम सिर्फ उसी तरह करते हैं जिस तरह रसूल अल्लाह ﷺ को करते देखा होता।"

मालूम हुआ कि सहाबा करम अलैहिमुर्रिज़वान नबी करीम ﷺ का तसव्वुर करते हुए आपकी सुन्नत मुबारक पर अमल करते थे। इसलिए सहाबा करम रज़ियल्लाहु अन्हुम से बढ़कर कोई पीर-फ़क़ीर नहीं हो सकता। हज़ारों अग़वाथ और अक़्ताब सिर्फ एक सहाबी-ए-रसूल का मुक़ाबला नहीं कर सकते, वो सिर्फ और सिर्फ इस लिहाज़ से कि वो अपने नबी पाक के पक्के और सच्चे ताबेदार थे।

इस इल्लत और ज़ाबिता को मद्देनज़र रख कर असलाफ-ए-सालेहीन रहिमहुमुल्लाह ने उलमा-ए-बा-अमल को औलिया-ए-खुदा बताया। लेकिन इसके बरअक्स दौर-ए-हाज़िरा में अवाम को उलमा-ए-किराम से बदज़न करके जाहिल लोग बे-अमल औलिया बनाने में मसरूफ़ हैं। हालाँकि उलमा-ए-ज़े-वक़ार, यानी अपने इल्म पर अमल करने वाले ही औलिया हैं।

चुनाँचे मुल्ला अली क़ारी अलैहिर्रहमतुल बारी फ़रमाते हैं:

"इन कान अल-उलमा लैसा बि-औलिया फ लैसा लिल्लाह वली।"

(अगर उलमा औलिया नहीं हैं तो फिर कोई अल्लाह का वली नहीं।)

और फ़रमाते हैं:

"अल-औलिया हुम अल-उलमा अल-आमिलून।"

(ये बा-अमल उलमा ही औलिया अल्लाह हैं।)

(मिरकात, जिल्द 5, पेज 104)

मालूम हुआ कि हमारे दावा और मुल्ला अली क़ारी अलैहिर्रहमा के क़ौल की हकीकत एक ही है, कि उलमा-ए-आमिलीन व मुहद्दिसीन कराम ही औलिया-ए-आज़म हैं। याद रहे कि मज़कूरा बाला क़ौल न सिर्फ मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैह का है, बल्कि इमाम खलील बिन अहमद रहमतुल्लाह अलैह और दीगर अइम्मा-ए-मुहक्किकीन व उलमा-ए-राकीन का है।

चंद सच्चे और असली पीरों के अक़्वाल व अहवाल नज़ीरीन मुलाहिज़ा फरमाएँगे।

मक़सद-ए बैअत:

दौर-ए हाज़िर में रिवाज हो गया है कि पीर साहबान अपने मुरीदीन से अपने **दुनियावी उमूर** पर इतना कंट्रोल फ़रमाते हैं कि मुरीद जान तो दे सकता है, लेकिन पीर के हुक्म के खिलाफ नहीं कर सकता। और होना भी ऐसे ही चाहिए, लेकिन यही कंट्रोल इत्तिबा-ए शरीअत के लिए होना चाहिए। इसलिए कि बैअत का असल मक़सद यही है। इस्तिलाह-ए सूफ़िया में मुर्शिद के हाथ पर मुकम्मल इत्तिबा-ए फरमाबरदारी के एहद-ओ-पैमान का नाम "बैअत" है। जिसको आम तौर पर पीरी-मुरीदी कहा जाता है। यह बैअत खैर-उल-कुरून से आज तक बराबर सूफ़िया कराम का मामूल रही है। जिसके जवाज़-ओ-मशरूतियात पर बहुत सी आयत-ओ-हदीस की शहादत है, जिनमें से चंद यहां ज़िक्र की जाती हैं।

बैअत का सबूत क़ुरान से:

1. **"इन्नल्लाज़ीना युबायिउनका इन्नमा युबायिउनल्लाह, यदुल्लाही फौका अयदीहिम।"** (सूरह अल-फ़त्ह, आयत 10)

तर्जुमा : बेशक वो जो तुम्हारी बैअत करते (अपना हाथ तुम्हारे हाथ में देते) हैं वो तो अल्लाह ही से बैअत करते हैं उनके हाथों पर अल्लाह का हाथ है

2. **"लक़द रदियल्लाहु अनिल मोमिनीना इज़ युबायिउनका तहत अश-शजरह।"** (सूरह अल-फ़त्ह, आयत 18)

तर्जुमा : बेशक अल्लाह राज़ी हुआ ईमान वालों से जब वो उस पेड़ के नीचे तुम्हारी बैअत करते थे।

फ़ायदा:

यह हर दो आयत हुदैबिया की बैअत के बारे में नाज़िल हुई हैं। जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मदीना तय्यबा से उम्रा करने के लिए मक्का मुकर्रमा रवाना हुए और मक़ाम-ए हुदैबिया में तशरीफ लाए, तो कुफ़्फ़ार-ए मक्का ने आपका रास्ता रोका। आपने तफ़्सील-ए वाक़िया के लिए हज़रत उस्मान (रदियल्लाहु अन्हु) को मक्का मुकर्रमा भेजा। कुफ़्फ़ार ने हज़रत उस्मान (रदियल्लाहु अन्हु) को मक्का में रोक लिया और यह कहा कि "तुम काबा का तवाफ़ कर लो, मगर हम तुम्हारे नबी को मक्का में दाख़िल नहीं होने देंगे।" हज़रत उस्मान (रदियल्लाहु अन्हु) ने साफ़ इनकार कर दिया और फ़रमाया कि "जब तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तवाफ़-ए काबा न फरमाएंगे, मैं अकेला हरगिज़ तवाफ़-ए काबा नहीं करूंगा।" इस पर बात बढ़ गई और हज़रत उस्मान (रदियल्लाहु अन्हु) की वापसी में बहुत देर लग गई। इधर यह ख़बर मशहूर हो गई कि हज़रत उस्मान (रदियल्लाहु अन्हु) शहीद कर दिए गए। इस वक़्त हुज़ूर-ए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने एक दरख़्त के साये में बैठ कर असहाब से बैअत ली और तमाम सहाबा कराम

ने हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के दस्त-ए मुबारक के नीचे अपना हाथ रख कर बैअत की।

इस बैअत के अल्फ़ाज़ क्या थे? इस बारे में चंद अल्फ़ाज़ रिवायतों में मज़कूर हैं, लेकिन सब का हासिल "अला अस-समऐ व अत-ताअह" है, यानी हर अम्र-ओ-नही को बे-गोश-ओ-होश सुनना और उस पर अमल करना।

इन दोनों आयत से साफ़ ज़ाहिर है कि:

मुर्शिद के हाथ पर इत्तिबा-ए शरीअत का एहद-ओ-पैमान करना क़ुरान-ए मजीद से साबित और बाइस-ए रज़ा-ए इलाही है। और यही मशायख की बैअत है, जिसको आम तौर पर पीरी-मुरीदी कहा जाता है।

अज़ाला-ए-वेहम :

बाज़ ना-वाक़िफ़ों का ख़्याल है कि हुदैबिया की बैअत जिहाद-ए कुफ़्फ़ार में मुन्हसिर थी, और इसको मरूजा पीरी-मुरीदी से कोई तअल्लुक़ नहीं। मगर अहल-ए इल्म पर पोशीदा नहीं कि यह ख़्याल सरासर गलत व बातिल है। क्योंकि बैअत-ए हुदैबिया के अल्फ़ाज़ "अला अस-समऐ व अत-ताअह" से ज़ाहिर है कि इस बैअत में मुशरिकीन से जिहाद और दूसरे आमाल-ए सालिहा भी दाख़िल हैं। और अगर बिल-फ़र्ज़ यह तसलीम भी कर ली जाए कि बैअत-ए हुदैबिया जिहाद ही में मुन्हसिर थी, फिर भी इस बैअत से कम अज़ कम इतना तो बिला-जमा साबित ही हो गया कि किसी अम्र-ए दीनी का किसी के हाथ पर एहद करना उसकी अस्ल शरई हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से साबित-ओ-मसरूर, बल्के मामूर बह व मजूर अलैह है। फिर मरूजा पीरी-मुरीदी में अगर मुरीद अपने पीर का हाथ पकड़ कर इत्तिबा-ए शरीअत व आमाल-ए सालिहा का एहद करता है तो यह क्यों कर महल-ए एतिराज़ हो सकता है?

जिहाद-ए नफ़्स:

तसव्वुफ़ में मशायख की बैअत एक क़िस्म की बैअत-ए जिहाद है। चुनांचे तफ़्सीर-ए जवाहिर अत-तंज़ील में आयत "व जाहिदू फिल्लाह हक़्क़ा जिहादिह।" के तहत मज़कूर है:

"क़ाल अल-इमाम अर-राग़िब: अल-जिहादु थलाथतु अज़रिब: मुजाहिदतुल अदुव्व अज़-ज़ाहिर, व मुजाहिदतुश शैतान, व मुजाहिदतुन नफ़्स, व तदख़ुलु थलाथतुहा फी क़ौलिही त'आला: व जाहिदू फिल्लाह हक़्क़ा जिहादिह।"

इमाम राग़िब ने फ़रमाया: **"जिहाद की तीन क़िस्म हैं: ज़ाहिरी दुश्मन (कुफ़्फ़ार) से जिहाद, शैतान से जिहाद, और नफ़्स से जिहाद।** और यह तीनों जिहाद इस आयत में दाख़िल हैं।"

अहादीस-ए मुबारक से भी जिहाद-ए नफ़्स की ताईद होती है:

1. **"जाहिदू अल-कुफ़्फ़ार बि-अयदीकुम व अलसिनतकुम।"**

तर्जुमा: कुफ़्फ़ार से जिहाद करो अपने हाथों और ज़ुबानों से।

फ़ायदा: यह क़िस्म-ए अव्वल का जिहाद है।

2. **"जाहिदू अह्वाअकुम कमा तुजाहिदूना अअदाअकुम।"**

तर्जुमा : अपनी ख्वाहिशात-ए नफ़्सानिया से जिहाद करो, जैसे कि तुम अपने दुश्मनों (कुफ़्फ़ार) से जिहाद करते हो।)

फ़ायदा: यह दूसरी और तीसरी क़िस्म का जिहाद है।

जिहाद-ए अकबर:

नफ़्स से जिहाद आला क़िस्म का जिहाद है, जिसको हदीस शरीफ़ में "जिहाद-ए अकबर" फ़रमाया गया। जैसा कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने एक मैदान-ए जंग से वापस होते हुए इरशाद फ़रमाया:

"रजअना मिन अल-जिहादिल असग़र इलाल जिहादिल अकबर"

यानी छोटे जिहाद (जिहाद-ए कुफ़्फ़ार) से हम बड़े जिहाद (जिहाद-ए नफ़्स) की तरफ़ पलटे|

3. "अल-मुजाहिद मन जाहिद नफ़्सहू फी ताअतिल्लाह|"

तर्जुमा : मुजाहिद (कामिल) वही है जो ताअत-ए इलाही में अपने नफ़्स के साथ जिहाद करे|) *(मिश्कात अल-मसाबीह)*

फ़ायदा:

अहादीस-ए मज़कूरा से जिहाद-ए नफ़्स का आला क़िस्म जिहाद और जिहाद-ए अकबर होना साबित है| और जब जिहाद-ए असग़र (जिहाद-ए कुफ़्फ़ार) के लिए बैअत का मशरू व मसनू होना मुसल्लम है, तो फिर कोई वजह नहीं कि जिहाद-ए अकबर (जिहाद-ए नफ़्स) के लिए बिल-अवला मशरू व मसनू न हो| फिर एक बैअत को मसरूर व मजूर अलैह करार देना और दूसरी बैअत को बिदअत व ज़लालत कहना सरासर सफ़ाहत व जहालत नहीं तो और क्या है?

आयत-ए करीमा (3):

"या अय्युहन-नबीय्यु इज़ा जाअकल मोमिनात युबायिनका अला अल्ला युश्रिक्ना बिल्लाही शैअन व ला यस्रिक़्ना व ला यज़्नीना व ला यक़्तुल्ना औलादहुन्ना व ला यअतीना बि-बुह्तानिन यफ्तरीनहु बैना अयदीहिन्ना व अर्जुलिहिन्ना व ला यअसीनका फी मअरूफिन फ बाइइहुन्ना वसतग़फ़िर लहुन्नल्लाह इन्नल्लाह ग़फूरुर रहीम|"

(तर्जुमा :***ऐ नबी जब तुम्हारे हुज़ूर मुसलमान औरतें हाज़िर हों इस पर बैअत करने को कि अल्लाह का कुछ शरीक न ठहराएंगी और न चोरी करेंगी और न बदकारी और न अपनी औलाद को क़त्ल करेंगी और न वह बोहतान लाएंगी जिसे अपने हाथों और पाँवों के दरमियान यानी मौज़ए विलादत (गुम्तांग) में उठाएं और किसी नेक बात में तुम्हारी ना फ़रमानी***

न करेंगी तो उनसे बैअत लो और अल्लाह से उनकी मग़फ़िरत चाहो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।)

फ़ायदा:

औरतों की यह बैअत फ़त्ह-ए मक्का के दिन हुई। हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सफ़ा की पहाड़ी पर रौनक अफ़रोज़ थे। पहले आपने मोमिन मर्दों से बैअत ली, फिर आपने हज़रत उमर (रदियल्लाहु अन्हु) को हुक्म फ़रमाया कि पहाड़ी के नीचे उतर कर औरतों से बैअत लें। चुनांचे हज़रत उमर (रदियल्लाहु अन्हु) औरतों से बैअत लेते थे और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अहकाम उन औरतों तक पहुंचाते थे।

बैअत-ए मशायख:

इस आयत-ए करीमा से साफ़ ज़ाहिर है कि फ़त्ह-ए मक्का के दिन हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मर्दों और औरतों से बैअत ली, और आयत में जिन आमाल-ए सालिहा पर बैअत का ज़िक्र है, उनमें से एक भी क़िताल-ए कुफ़्फ़ार से मुतअल्लिक़ नहीं।

फ़वाइद:

1. मालूम हुआ कि यह बैअत इत्तिबा-ए शरीअत व तज़किया-ए नफ़्स ही के लिए थी, जो बिल्कुल मरूजा पीरी-मुरीदी के हम मअनी है।

2. यह भी इशारा हो गया कि यह बैअत हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ख़ासाइस में से नहीं थी, बल्के दूसरे उलमा-ए हक़ीक़त व मशायख-ए तरीक़त भी इस बैअत के मजाज़ हैं। जैसा कि हज़रत उमर (रदियल्लाहु अन्हु) ने ब-जज़ात हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) औरतों से यह बैअत की।

पीरी-मुरीदी:

खुलासा यह कि तज़किया-ए नफ़्स व इत्तिबा-ए शरीअत के लिए मशायख की बैअत, जिसको पीरी-मुरीदी कहते हैं, क़ुरान-ए करीम से साबित व बाइस-ए रज़ा-ए इलाही है। जो खैर-उल-क़ुरून से आज तक जारी है, और इंशाअल्लाह त'आला क़यामत तक जारी रहेगी।

खैर-उल-क़ुरून में पीरी-मुरीदी:

बहुत सी सहीह हदीस भी इस बारे में मौजूद हैं कि मशायख-ए सूफ़िया की पीरी-मुरीदी ज़माना-ए रिसालत में मौजूद थी। चुनांचे हम यहां चंद हदीसों से इसका सबूत अर्ज़ करते हैं:

हदीस (1): हज़रत उबादा बिन सामित (रदियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि नबी-ए करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने सहाबा की एक जमाअत से, जो उस वक्त हाज़िर थे, यह फ़रमाया:

"तुम लोग मुझसे बैअत करो इस बात पर कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहरोगे, और चोरी न करोगे, और ज़िना न करोगे, और अपनी औलाद को क़त्ल न करोगे, और अपने आप से घड़ कर किसी पर बुह्तान न बांधोगे, और किसी हुक्म-ए शरीअत में नाफरमानी न करोगे।"

तो हम सब हाज़िरीन सहाबा ने हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से बैअत की। *(बुख़ारी व मुस्लिम)*

हदीस (2) : हज़रत अम्र बिन अल-आस (रदियल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं:

"मैंने नबी-ए करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर होकर यह अर्ज़ की: या रसूलल्लाह, अपना दस्त-ए मुबारक फैला दीजिए, मैं आपसे बैअत करूंगा।"

तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपना दस्त-ए मुबारक फैला दिया। *(मिश्कात अल-मसाबीह)*

हदीस (3): उमैमा बिन्त क़ैस (रदियल्लाहु अन्हा) से रिवायत है, उन्होंने कहा:

"मैंने औरतों की एक जमाअत के साथ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से बैअत की।" *(मिश्कात अल-मसाबीह)*

हदीस (4) : हज़रत आइशा (रदियल्लाहु अन्हा) ने औरतों की बैअत के मुतअल्लिक़ फ़रमाया:

"हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **'या अय्युहन-नबीय्यु इज़ा जाअकल मोमिनात'** की आयत से औरतों का इम्तिहान फ़रमाते थे। और जो औरत इस आयत में ज़िक्र की हुई बातों का इक़रार कर लेती थी, तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उससे फरमा देते थे: 'मैंने तुझसे यह बैअत ले ली।' यह ब-ज़रिया-ए कलाम होती थी। अल्लाह की क़सम, कभी भी हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का हाथ किसी औरत के हाथ से बैअत के वक्त नहीं लगा।" *(बुख़ारी शरीफ़)*

फ़ायदा:

यह चारों हदीस दलालत करती हैं कि मशायख की मरूजा पीरी-मुरीदी और तरीक़ा-ए बैअत भी सब कुछ ज़माना-ए नबवी में मौजूद व मामूल था। और यक़ीनन हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बैअत और मशायख की पीरी-मुरीदी में सर-ए मो फर्क (ज़रा भी अंतर) नहीं।

अक़साम-ए बैअत:

मज़कूरा हदीसों के इलावा और भी बहुत सी सहीह हदीसों से साबित है कि सहाबा कराम (रदियल्लाहु अन्हुम) हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से बैअत करते थे। कभी हिजरत व जिहाद पर, कभी अरकान-ए इस्लाम की पाबंदी पर, कभी शरीअत पर अमल करने और

गुनाहों से बचने पर। चुनांचे एक मर्तबा अंसार की औरतों से नौहा न करने पर बैअत ली। इसी तरह चंद मुहताज मुहाजिरीन से इस बात पर बैअत ली कि वो किसी से किसी चीज़ का सवाल न करेंगे। चुनांचे बैअत के बाद इन मुहाजिरीन का यह हाल था कि अगर घोड़े से इन लोगों का कोड़ा ज़मीन पर गिर पड़ता तो यह लोग किसी से कोड़ा उठा देने का भी सवाल नहीं करते थे, बल्के खुद घोड़े से उतर कर कोड़ा उठाते थे।

बाज़ अवाम और चंद जाहिलों का यह ख़्याल कि:

हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और सहाबा (रदियल्लाहु अन्हुम) के ज़माने में बैअत-ए जिहाद और बैअत-ए खिलाफत के सिवा कोई बैअत नहीं होती थी, यह सरासर मुताला की कमी और ला-इल्मी का वबाल है। वरना हदीस-ए मज़कूरा से वाज़ेह है कि इनमें से कोई भी बैअत न तो बैअत-ए जिहाद थी, न बैअत-ए खिलाफत, बल्के यह तमाम बैअतें आमाल-ए सालिहा से मुतअल्लिक़ तज़किया-ए नफ़्स के लिए थी, जो ज़माना-ए रिसालत से आज तक जारी हैं। जैसा कि मशायख कराम के शजरून से ज़ाहिर है। हां, अलबत्ता फर्क इतना है कि ज़माना-ए नुबूवत और खुलफा-ए राशिदीन के दौर में क्योंकि यह हज़रात उलूम-ए ज़ाहिर व बातिन और इंतिज़ाम-ए सियासत व मआश के कमालात के जामी थे, इसलिए बैअत-ए खिलाफत, बैअत-ए जिहाद, और बैअत-ए तज़किया-ए नफ़्स, ग़र्ज़ सब बैअतें इन्ही के दस्त-ए हक़ परस्त पर होती थी, और इन बैअतों में बाहम कोई ख़ास इम्तियाज़ भी नहीं था। लेकिन खिलाफत-ए राशिदा का दौर गुज़र जाने के बाद जब इमारत व सल्तनत का ज़माना शुरू हो गया तो इस वक्त खिलाफत की बैअत तो खुलफा व उमरा के हाथ पर होने लगी, और बैअत-ए तज़किया-ए नफ़्स की सुन्नत क़ाइम करने के लिए उलमा-ए रब्बानी व मशायख-ए दीन की जमाअत क़ाइम हुई, और इन बुज़ुर्गों ने इस सुन्नत-ए करीमा को हर दौर में ज़िंदा रखा, और हर क़र्न में यह मुबारक तबक़ा मौजूद व मक़बूल रहा, और हर दौर के उलमा-ए हक़ ने इन बुज़ुर्गों की बैअत व सोहबत को वसीला-ए वुसूल

इला अल्लाह करार दिया। चुनांचे इमाम रब्बानी मुजद्दिद अल्फ़ सानी (रदियल्लाहु अन्हु) का इरशाद है:

"दौलत (मअरिफ़त) हर चंद कहीं से भी पहुंचे, मगर उसको अपने पीर ही की तरफ राअजे करना चाहिए, और यह दौलत जिस जगह से भी मिले, अपने पीर ही की तरफ से समझना चाहिए।"

(मक़्तूबात इमाम रब्बानी)

मौलाना जलालुद्दीन रूमी (रदियल्लाहु अन्हु) ने मसनवी शरीफ़ में फ़रमाया:

"नफ़्स र नकुशद र नकुशद बिग़ैर अज़ ज़िल्ल-ए पीर, दमन-ए आन नफ़्स कुश महक़म बिगिर।"

(नफ़्स को सिवाए मुर्शिद के कोई नहीं मार सकता। ऐ नफ़्स कुश बुज़ुर्ग, उसका दमन मज़बूत पकड़।)

"मर्द-ए तन्हा ज़े रहबर सर न पीच, ता न बिनी औन व लश्कर-हाए शेख।"

(तन्हा इंसान रहबर से सर न फेरे, जब तक शेख की मदद व लश्कर न हो, कामयाबी नहीं हो सकती।)

सच्चे और झूठे पीर:

यहां फ़क़ीर सच्चे और झूठे पीरों का इम्तियाज़ करता है, ताके हक़ के मुतलशी को सच्चे पीर का दमन नसीब हो, और झूठे पीर से उसे बचने का मौक़ा मिल सके।

सच्चे पीर:

बुज़ुर्गान-ए दीन की रिवायत हमारे दिल-ओ-दिमाग़ में रूहानियत का सूर फूंक रही हैं। जहां सलातीन की शमशीर और उलमा की ज़ुबानें तबलीग-ए इस्लाम का फ़र्ज़ा सर अंजाम देने से क़ासिर रही हैं, वहां इन

सूफ़िया-ए कराम की निगाहों ने वो काम किया कि कोह-ए क़ाफ़ से रास-ए कुमारी तक, मक्का मुकर्रमा से मस्क़त तक, बरबर व अंदलुस से लाहौर व दिल्ली तक, इस्लामी तअलीमात के बरक़ी क़ुमक़ुमे रोशन कर दिए।

इत्तिबा-ए सुन्नत पर सूफ़िया-ए कराम ने इतना ज़ोर दिया है कि हम इसके बग़ैर नहीं रह सकते कि अगर शरीअत के चिराग रोशन हुए हैं तो सिर्फ इन्ही के दम से।

देखिए, अपने अपने मख़्सूस अंदाज़ में ये मशायख कराम शरीअत को कितनी अहमियत देते हैं:

1. "सुलूक की राह वो शख़्स तय कर सकता है जिसके दाए हाथ में क़ुरान हो और बाए हाथ में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सुन्नत, ताके इन दोनों शमओं की रोशनी में चलने से न तो वो शुकूक व शुबुहात के गढ़े में गिरे और न बिदअत की अंधेरियों में टामक-टावियां मरे।" *(रईस अल-ताइफ़ा हज़रत जुनैद बग़दादी, रदियल्लाहु अन्हु)*

2. "रास्ता खुला हुआ है, और किताब व सुन्नत के अवराक़ हमारे सामने खुले हुए हैं।" *(शेख अबू बक्र तमीमतानी, रदियल्लाहु अन्हु)*

3. "ग़ाफ़िल उलमा, मुंह फट फ़क़ीर, और जाहिल सूफ़िया की हमसोहबत से गुरेज़ कर। ये तीन गिरोह सोहबत के क़ाबिल नहीं।"

   (शेख अबू अली रुदबारी, रदियल्लाहु अन्हु)

4. "माज़ी में सूफ़िया-ए कराम क़ुरान, फ़िक़्ह, हदीस, और तफ़्सीर के आलिम होते थे।"

   (अल्लामा इब्न अल-जौज़ी, रदियल्लाहु अन्हु)

5. "जिसे शरीअत का इल्म नहीं, उसका दिल जहालत के मर्ज़ में मुब्तला है।" *(शेख अली हुजविरी, रदियल्लाहु अन्हु, डाटा गंज बख़्श)*

6. "हमेशा हज़रत मुहम्मद मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैरवी करता रह, कि उनकी शरीअत का नूर तेरी रहनुमाई करे।"

(ख्वाजा फरीदुद्दीन अत्तार, रदियल्लाहु अन्हु)

7. "जिसने भी नबी-ए करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के खिलाफ राह इख़्तियार की, वह हरगिज़ मंज़िल-ए मक़सूद तक नहीं पहुंचेगा।" *(शेख मुस्लिहुद्दीन सादी शिराजी, रदियल्लाहु अन्हु)*

8. "जाहिल पीर मसख़रा-ए शैतान हो जाता है। उसकी निगाह हक़ीक़त और सराब में इम्तियाज़ करने से क़ासिर रहती है।"

(शेख बाबा फरीद शकरगंज, रदियल्लाहु अन्हु)

9. "पीर इस शान का होना चाहिए कि वो शरीअत, तरीक़त, और हक़ीक़त का आलिम हो। जब उसके अंदर यह ख़ासियत होगी तो खिलाफ-ए शरीअत फैल (काम) सरज़ाद नहीं होगा।"

(शेख निज़ामुद्दीन औलिया, रदियल्लाहु अन्हु)

10. "ऐ भाई, अगर तू आज फ़ुक़रा के दरजात व मरातिब का फर्क जानना चाहता है तो यह देख के वो कहां तक शरीअत के पैरू हैं। शरीअत ही वो कसौटी है जिस पर किसी फ़कीर की हक़ीक़त परख जाती है।"

(शाह कलीमुल्लाह देहलवी, रदियल्लाहु अन्हु)

11. "अगर किसी शख़्स को देखो कि वो अल्लाह त'आला के साथ ऐसी हालत का दावा करता है जो उसे इल्म-ए शरीअत की हद्द से निकाल देती है, तो उसके करीब न जाओ। और अगर किसी शख़्स को देखो कि वो एक हालत का दावा करता है जिसकी कोई दलील नहीं है, और ज़ाहिरी अहकाम की पाबंदी उसकी शहादत नहीं देती, तो उसके दीन पर तोहमत लगाओ।" *(शेख हसन नूरी, रदियल्लाहु अन्हु)*

12. "किसी पीर का मसलक दीन नहीं बन सकता। किताब व सुन्नत की हुज्जत के बग़ैर चारा नहीं।"

(शेख नसीरुद्दीन चिराग़ देहलवी, रदियल्लाहु अन्हु)

13. "एक पीर-ओ-मुर्शिद के लिए यह लाज़िमी है कि वो क़ुरान व हदीस का ज़बरदस्त आलिम हो।"

(अल-क़ौल अल-जमील, शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी, रदियल्लाहु अन्हु)

14. "वो (औलिया अल्लाह) अल्लाह के दीन और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सुन्नत के लिए मज़बूत क़िले थे।"

(मीर ख़ुर्द, रदियल्लाहु अन्हु)

याद रहे कि:

हालात के तकाज़े और वक्त की मसलहातें उलमा-ए ज़ाहिरीन को इस बात पर मजबूर करती हैं कि वो खल्वत में अहकाम-ए शरीअत का एलान करें, और जलोत में उमरा व सलातीन की ख़ुशनूदी मिज़ाज की ख़ातिर ज़बान बंद रखें या मन ग़रत तअवीलात का सुमारा ढूंढ़ें। इसके बर खिलाफ हम यह देखते हैं और तारीख इस पर गवाह है कि सूफ़िया या उलमा-ए हक़ ने (उलमा-ए हक़ ही दर असल सूफ़िया के गिरोह से तअल्लुक़ रखते हैं) कभी लाग-लपेट से काम नहीं लिया। कभी ऐसा नहीं हुआ कि उन्होंने एलान-ए हक़ से पहलू तही (किनारा) की हो।

ज़ैल की चंद मिसालें हम अपने दावों के सबूत में पेश करते हैं:

1. उमर बिन हबीरा:

जब खलीफा यज़ीद बिन अब्दुल मलिक की जानिब से वली इराक़ व खुरासान मुक़र्रर होकर आया तो उसने ख्वाजा हसन बसरी, इमाम इब्न सिरीन, और इमाम शाअबी (रदियल्लाहु अन्हुम) को तलब किया और उनके सामने यह तक़रीर की:

"यज़ीद बिन अब्दुल मलिक को अल्लाह त'आला ने अपने बंदों पर खलीफा मुक़र्रर किया है, और उनकी इत्तिबा व इताअत का एहद लिया है (यानी मुलाज़िमों से)। उसका हुक्म सुनने और बजा लाने का मुझको जो ओहदा खिलाफत की तरफ से अता हुआ है, वो आप सब को मालूम है। खलीफा की तरफ से एक हुक्म मुझको मिलता है और मैं बिला तमाम तअमील करता हूं। इस बारे में आपकी क्या राय है?"

ख्वाजा हसन बसरी (रदियल्लाहु अन्हु) ने इस सियासी गुफ़्तगू का जवाब जिन साफ़ और सच्चे अल्फ़ाज़ में दिया, वो ज़ियादा क़ाबिल-ए शाहिद हैं। उन्होंने फ़रमाया:

"उमर बिन हबीरा, यज़ीद के मुआमले में अल्लाह त'आला से डर, और अल्लाह त'आला के मुआमले में यज़ीद का ख़ौफ़ मत कर। अल्लाह त'आला तुझसे यज़ीद के शर को दफा कर सकता है, मगर यज़ीद इस अहकाम अल-हकीमीन के क़हर को नहीं रोक सकता। वो वक़्त बहुत दूर नहीं कि अल्लाह त'आला तेरे पास अपना एक फरिश्ता भेजेगा जो तुझको शानदार तख़्त और वसी महल से अलग कर के तंग क़ब्र में पहुंचा देगा। वहां सिवाए तेरे आमाल के कोई तुझको निजात नहीं दिलाएगा।" इब्न हुबैरा रज़ियल्लाहु अन्हु: अगर तू ख़ुदा का गुनाह करे तो ख़ूब समझ ले कि ख़लीफ़ा को उसने अपने दीन और अपने बन्दों का मुहाफ़िज़ व नासिर मुक़र्रर किया है। फिर ख़ुदा के दीन के ख़िलाफ़ उसके मुक़र्रर किए हुए हाकिम की वजह से जुर्रत मत करना, क्योंकि."ख़ालिक-ए-अकबर के मुक़ाबले में मख़्लूक़ का हुक्म मानना किसी तरह रवा नहीं।

(इब्न ख़ल्लिकान, जिल्द 1, सफा 128)

2. इमाम अबू हनीफा (रदियल्लाहु अन्हु):

जब मंसूर अब्बासी बग़दाद का खलीफा हुआ तो उसकी नज़र मंसब-ए इमामत के लिए इमाम आज़म (रदियल्लाहु अन्हु) पर पड़ी। चुनांचे उन्हें कूफ़ा से बुला कर ओहदा-ए क़ज़ा क़बूल करने की फरमाइश की। इमाम आज़म ने इस ओहदा को क़बूल करने से इनकार कर दिया। मंसूर ने क़सम खा कर कहा:

"तुमको क़ाज़ी ज़रूर मुक़र्रर करूंगा।"

इमाम आज़म ने भी क़सम खा कर कहा:

"मैं इस ओहदा को मंज़ूर नहीं करूंगा।"

खलीफा ने दोबारा क़सम खाई, उन्होंने मुकर्रर इनकार किया और अपने इनकार की वजह से यह बयान की:

"मैं अपने आप को इस मंसब का अहल नहीं समझता।"

हाजिब, अनस बिन मलिक ने खलीफा की चापलूसी में इमाम आज़म से कहा:

"अमीर अल-मोमिनीन क़सम खा चुके हैं।"

इमाम आज़म ने फ़रमाया:

"अमीर अल-मोमिनीन के लिए कफ़्फ़ारा-ए क़सम अदा कर देता हूं। ये मेरे लिए ज़ियादा सहल है।"

मुख्तसर यह है कि खलीफा ने इमाम आज़म को क़ैद में डाल दिया और इसी क़ैद-ओ-बंद के आलम में इमाम ने वफात पाई।

(इब्न ख़ल्लिकान, जिल्द 1, सफा 128)

3. शेख अबू सुलैमान दारानी (रदियल्लाहु अन्हु):

खलीफा मंसूर अब्बासी के चेहरे पर एक मक्खी बार बार बैठी तो उसका नाक में दम आ गया। उसने झल्ला कर मशहूर मुफ़स्सिर-ए क़ुरान, आलिम-ए रब्बानी, शेख अबू सुलैमान दारानी (रदियल्लाहु अन्हु) से कहा:

"आख़िर मक्खी पैदा करने की अल्लाह को क्या ज़रूरत पेश आई थी?"

इस आलिम-ए रब्बानी ने जवाब दिया:

"तुझे ख़बर नहीं, अल्लाह ने मक्खियां इसलिए पैदा की हैं कि मुतकब्बिर का घुरूर टूटे और उसका सर नीचा हो।" चुकिं तू मुतकब्बिर है अल्लाह तआला तेरे गुरूर तोड़ने के लिए मक्खी तेरे पिछे लगा दी

(इब्न ख़ल्लिकान, जिल्द 2, सफा 112)

4. हज़रत सुफ़ियान शौरी (रदियल्लाहु अन्हु):

हज़रत सुफ़ियान शौरी (रदियल्लाहु अन्हु) एक दफ़ा महदी अब्बासी के पास गए और कहा:

"मुझे यह रिवायत पहुंची है कि खलीफा-ए सानी, हज़रत उमर (रदियल्लाहु अन्हु) ने अपने एक सफ़र-ए हज्ज में सिर्फ बारह अशरफियां ख़र्च की थीं। तुम्हारा इसराफ़ जिस हद्द को पहुंचा है, उसके बयान की कोई ज़रूरत नहीं।"

खलीफा ने ग़ज़बनाक होकर कहा:

"अपनी सी ज़िल्लत हालत मेरी भी करनी चाहते हो?"

हज़रत सुफ़ियान शौरी (रदियल्लाहु अन्हु) ने जवाब दिया:

"मुझसे न हो, मगर जिस हाल में हो उसमें तो कमी कर दो।"

(तज़किरत अल-हुफ़्फ़ाज़, सफा 185, जिल्द 1)

खुशामदी (चापलूस) मुल्लाओं से मुराद:

दौर-ए-हाज़िरा में पीरी-मुरीदी का धंधा करने वाले अक्सर शरीयत से बेगाने, बल्कि बाज़ बद-किस्मत तो शरीयत का मज़ाक उड़ाते हैं। चूंकि वो किसी दरबार वाले की औलाद हैं या किसी तरीके से वो पीर-ए-मुग़ान हैं, इसलिए उनकी हर ग़लत बात को विलायत (झूठी) का राज़ समझा जाता है। इसी लिए न सिर्फ बर्दाश्त है, बल्कि इसे राज़-ए-मख़्फ़ी का लिबास ओढ़ा दिया जाता है। और ऐसा न सिर्फ अवाम और जुहला (जाहिल) करते हैं, बल्कि खुद को अहल-ए-इल्म के ज़ुमरे में शामिल करते हैं।

रस्मी पीरों और जाहिल फ़क़ीरों को ऐसे खुशामदी मुल्लाओं की ज़रूरत होती है, बल्कि वो उन्हें अपना ख़ानदानी पालतू और वफ़ादार मौलवी समझते हैं। बल्कि कुछ थोड़ी सी नज़र-ए-शफ़्क़त से नवाज़ें तो उन्हें अपना ख़लीफ़ा साहिब मशहूर करते हैं। ऐसे खुशामदी मुल्ला न सिर्फ खुद गुमराह होते हैं, बल्कि दूसरों को भी गुमराही के गड्ढे में डालते हैं। मुल्ला अली क़ारी (रहमतुल्लाह) अपने एक रिसाले में लिखते हैं कि ऐसे मौलवी क़यामत में सख़्त अज़ाब में मुब्तला होंगे। इन्हीं के लिए लोहे की गर्म लगाम मुंह में डालने की नवीद सुनाई गई है। और हक़ भी यही है कि ऐसों को सख़्त और बड़ी सज़ा मिलनी चाहिए। इसलिए कि जब उन्हें यक़ीन है कि ये बे-अमल जाहिल दीन से बेगाना पीर है, क्योंकि सच्चा पीर तो रसूल अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का सच्चा ताबेदार है, और ये झूठा पीर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैरवी से दूर और शैतान का खिलौना है। और ये कोई राज़ की बात भी नहीं, क्योंकि दीन-ए-मुस्तफ़ा वाज़ेह और खुले रास्ते का नाम है।

इसलिए जो भी शैतान के खिलौने पीर की खुशामद करता है, वो यक़ीन कर ले कि कल क़यामत में उसे सख़्त अज़ाब का सामना होगा।

नक़ली पीरों से जिहाद:

यूं तो इस्लाम के हर मुख़ालिफ़ का मुक़ाबला दौर-ए-हाज़िरा में जिहाद से कम नहीं, लेकिन नक़ली पीरों के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलंद करना जिहाद-ए-अकबर है। इसलिए कि वो मआश-ओ-मआशरा पर ऐसे छाए हुए हैं कि किसी

को उनके ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने की जुर्रत नहीं हो सकती। उलमा-ए-किराम, जिन्हें विरासत-ए-नबवी में हक़-गोई का मंसब सुपुर्द है, अक्सर उनके खुशामदी और कासा-लीस हैं। और ऐसे लुटेरे पीर और शरीयत से दूर और नाम के फ़क़ीर और काम के इब्लीस हुकूमती उमूर और हुकूमत के बा-असर लोगों पर हावी हैं। और अहल-ए-दुनिया को अपनी झूठी पीरी-फ़क़ीरी के दाम-ए-तज़्वीर (धोखे का जाल) में फंसा कर गिरवीदा(Atract) बना लेते हैं। और अक्सर अवाम तो वैसे भी कल-अन-आम (लापरवाह) होते हैं और समझते हैं कि इनके ख़िलाफ़ करने से दुनिया में न-मालूम कितने मुसीबत टूट पड़ेंगे और आख़िरत में तो गोया वो बेहिश्त को ऐसे जाहिल पीरों और लुटेरे फ़क़ीरों की जागीर समझते हैं।

इसलिए फ़क़ीर औवेसी (ग़ुफ़िरा लहू) सबसे पहले इन्हीं हज़रात से मुख़ातिब है कि आप हज़रात हमारे अस्लाफ़ की निशानियां और उनकी औलाद या रिश्तेदार हैं। तो हमारा फ़र्ज़ है कि हम आप को अर्ज़ करें कि आप अपने अस्लाफ़ के नक्श-ए-क़दम पर चलें, वरना अल्लाह बे-नियाज़ की गिरफ़्त से न तुम बच सकोगे न तुम्हारे पैरोकार।

फिर उलमा-ए-किराम से गुज़ारिश है कि ख़ुदारा अपने पीरों-फ़क़ीरों को औलिया कहना छोड़ दो, बल्कि उनके ख़िलाफ़ आवाज़ बुलंद कर दो ताकि अवाम को ग़लत फ़हमी न हो, वरना कल क़यामत में न सिर्फ अपने गूंगे शैतान बनने की सज़ा पाओगे, बल्कि जितना अवाम-ए-जुहाला ऐसे झूठे लुटेरों और नक़ली पीरों के झांसे में आएंगे, उनका मज़ा-ओ-अज़ाब तुम्हें होगा।

व मा अलैना इल्लल बला।

नक़ली पीर कौन?

मेरी गुज़ारिश सहरा की सदा अलामत न होगी, बहुत से ख़ुश-क़िस्मत फ़क़ीर के चंद निशान बताने से ऐसे लुटेरों और जाहिल पीरों से निजात पाएंगे (इंशाअल्लाह)। यूं तो इस गए-गुज़रे दौर में भी अल्लाह के ऐसे नेक बंदे मौजूद हैं जिनके दम से रूहानियत का भरम क़ायम है और जो सही मानी में सलफ़-

उस-सालेहीन का नमूना और औलिया-ए-मशाइख़ के जानशीन हैं। लेकिन जिस तरह हर चमकने वाली चीज़ सोना नहीं होती, उसी तरह हर वो शख़्स जो वलीयों की वज़ा-क़ता इख़्तियार कर ले वली नहीं हो सकता। बाज़ तमा-साज़ों ने आम्मत-उन-नास की ख़ुश-अक़ीदगी से फ़ायदा उठाने के लिए पीरी-फ़क़ीरी का ढोंग रचा कर न सिर्फ आज के सच्चे और ख़ालिस पीरों के मुताल्लिक़ बद-गुमानी पैदा कर दी है, बल्कि औलिया-ए-साबिक़ा से भी सू-ए-ज़न्नी (बुरी सोच) का सामान कर दिया है।

इन झूठे और नक़ली पीरों की मुतअद्दिद क़िस्में हैं:

1. **जिनका न हस्ब-नसब दुरुस्त है न तरीक़त के किसी मारूफ़ ख़ानदान से तअल्लुक़ रखते हैं**, लेकिन बग़ैर ख़ुद ही पीर बन कर बैठे हैं और अपनी झूटी सच्ची करामात से सादा-लोह लोगों को अपने दाम-ए-तज़्वीर में फंसाते रहते हैं।

2. **ऐसे पीर भी देखने में आए हैं** जिन्होंने मुख़्तलिफ़ उर्दू, फ़ारसी व दीगर ज़बानों के बहुत से अशआर ज़ब्त कर रखे हैं, जिन से अपने इल्म-ओ-फ़ज़्ल का सिक्का लोगों पर बिठाते हैं और उल्टी-सीधी करामात का ख़ुद ही चर्चा कर के जल्ब-ए-मनफ़अत (दुनियावी फायदा हासिल) की सूरत पैदा करते हैं।

3. **एक तबक़ा इन नंग-धड़ंग फ़क़ीरों और होश से बेगाना मज्ज़ूबों का है**, जो सट्टा-बाज़ों और जुएबाज़ों के सुलेमी और मादी बने हुए हैं। भांग और चरस के नशे में उनके मुंह से निकली हुई बातों की बड़ी क़दर की जाती है। सट्टा-बाज़ गोश-बर-आवाज़ रहते हैं। जो कुछ उन्होंने नशे की पैंक में कहा, उस से अपने मतलब का मफ़हूम अख़्तियार कर के निहाल हो गए।

4. **कुछ लोगों ने तावीज़-गंडे को कारोबार बना रखा है**। ये नज़र और नियाज़ के नाम पर लोगों से हज़ारों रुपये वसूल करते हैं। इन्हीं में जिन्न उतारने वाले पीर भी हैं। आम तौर पर औरतों का जमघटा इनके गिर्द रहता है, जो आम तौर पर उनकी शैतानी ख़्वाहिशात का तख़्ता-ए-मश्क़ (प्रैक्टिस का बोर्ड) बनती हैं। ये बे-ख़ुद ग़लत पीर मौक़ा मिलने पर मुरीद की बीवी,

लड़की, बहन या बहू पर हाथ साफ़ करने और उसके घर का सारा असास हज़म करने से भी नहीं चूकते।

5. **इन तालिआ-आज़मा पीरों में ऐसे भी हैं** जिन्होंने बाज़ फ़र्ज़ी मज़ारात से अपनी झूठी निस्बत क़ायम कर के अपनी पीरी का धंधा चलाया हुआ है। ये लोग पहले कोई मौक़ा ताक कर एक फ़र्ज़ी क़ब्र तैयार करते हैं और फिर उसके मुताल्लिक़ मन-घड़ंत रिवायत मशहूर कर के लोगों को उसकी तरफ़ मुतवज्जह करते हैं और ख़ुद उसके मुजाविर या सज्जादा-नशीन बन बैठते हैं।

6. **बाज़ बद-नामाद लोगों ने ज़िक्र के हल्क़े और सामा की महफ़िलें क़ायम कर के अपनी पीरी का बाज़ार गर्म कर रखा है**। हालांकि ये सारी ज़ाहिरदारी दुनियावी वजाहत और दौलत-ओ-इमारत के हुसूल का ज़रिया है।

7. **इन दो-फ़ितरत और मुलम्मा-साज़ पीरों के इलावा एक तबक़ा इन पीरों का है** जो बद-नाम-कुनंदा अन्न को नाले चंद के ज़ुमरे में आता है। औलिया के घर में भूत की मिश्ल इन्हीं पर सादिक़ आती है। ये हैं तो असली और ख़ालिस पीरों की औलाद, लेकिन उनके बुज़ुर्गों ने जिन ख़्वाइस के ख़िलाफ़ ज़िंदगी भर जिहाद किया, ये उन्हीं में घुलते हैं। बुज़ुर्गों के तुफ़ैल उन्हें ज़िंदगी की हर नेमत मयस्सर है, लेकिन नहीं मयस्सर तो वो नेकी, वो दीन-दारी और वो ख़ुदा-तरसी जो उन बुज़ुर्गों का तुर्रा-ए-इम्तियाज़ था। उनके बुज़ुर्गों ने जाह-ओ-हश्मत और औरंग-शाही को भी दल्क़-ए-फ़क़ीरी और हलीम दरवेशी के मुक़ाबले में पर-काह के बराबर नहीं समझा और ये दुनिया के दीवाने बने हुए हैं। न शराब से परहेज़, न ज़िना से आर। कोई शरई ऐब ऐसा नहीं जो इन में मौजूद न हो। कुत्ते पालते हैं, तीर लड़ाते हैं, घोड़ों की रेस लगाने पर सट्टा-बाज़ी वग़ैरा। इबादत से ग़र्ज़ है न इल्म से वास्ता। लोग इन तमाम क़बाहतों के बावजूद बुज़ुर्गों की औलाद समझ कर उनके हाथ चूमते हैं, घुटनों को हाथ लगाते हैं, मगर उन्हें फिर भी शर्म नहीं आती और इस्लाह-ए-अहवाल की ज़रूरत महसूस नहीं होती।

इंतिबाह:

हमारे नज़दीक जाली पीरों और झूठे दरवेशों की हौसला-अफ़ज़ाई का मूजिब भी यही हज़रात हैं। अगर ये हज़रात अपने बुज़ुर्गों के नक्श-ए-क़दम पर चलते, अपनी ज़िंदगियां साफ़-सुथरी गुज़ारते, तो इनके होते हुए किसी को पीरी और दरवेशी का झूठा दावा करने की जुर्रत न होती और न आम मख़्लूक़-ए-ख़ुदा इन्हें छोड़ कर मुलम्मा-साज़ पीरों की तरफ़ रुजू करने की ज़रूरत महसूस करती।

दर्स-ए-इबरत:

अफ़सोस है कि बाज़ बे-राह सज्जादा-नशीनों और फ़रेबी पीरों ने फ़क्र-ओ-दरवेशी के नाम पर ऐसा बो लगाया है कि जो रिवायत-ए-सलफ़ की हामिल मआदूदा चंद हस्तियां इस वक़्त मौजूद हैं, उन्होंने या तो ज़माने की नज़रों से ख़ुद को छुपा रखा है या अपनी रियाज़त-ओ-मेहनत के समर से किसी को आशना नहीं होने देतीं। और जो हये-हक़ उन से इस्तिफ़ादा से महरूम रहते हैं। ज़रूरत है कि कोई ये आस्तीन पीरों की दराज़-दस्ती के ख़िलाफ़ जिहाद किया जाए और इरादत-ओ-तरीक़त के जो रिश्ते इन की वजह से टूटते जा रहे हैं, उन्हें अज़-सर-ए-नौ इस्तेवार (नए सिरे से मजबूती और स्थिरता के साथ शुरुआत करना) करने की कोशिश की जाए। इसलिए हमारा मक़सद यह है कि औलिया-ओ-मशाइख़ से बद-गुमानी और सू-ए-ज़न्नी की जो फ़िज़ा पैदा हो गई है, उसे ख़त्म किया जाए। जिन बुज़ुर्गों की करामात मशहूर हो गई हैं, उनके मुताल्लिक़ ये भी बताया गया है कि उन्होंने ये कमाल कैसी-कैसी रियाज़तों के बाद हासिल किया और अपनी रियाज़त के इस समर से मख़्लूक़-ए-ख़ुदा की किस-किस तरह ख़िदमत की। उन में और मौजूदा दौर के मुलम्मा-साज़ पीरों में फ़र्क़ यह है कि उन्होंने ख़ुद को फ़ना कर के दूसरों के लिए ज़िंदगी का सामान पैदा किया और ये दूसरों की जेबों पर हाथ साफ़ कर के अपने पेट का ईंधन फराहम करते हैं।

बे-नग तफ़ावुत रा अज़ कुजास्त ता बे कुजा?
(देखो कितना बड़ा फ़र्क़ है!)

शरीयत ओ तरीक़त का चक्कर:

पीरी-मुरीदी का धंधा करने वालों का सबसे बड़ा तरीक़ा यह इस्तेमाल करते हैं कि शरीयत और है तरीक़त और है। जब हमारे जैसे को छेड़ते हैं, तो मुरीदीन को बावर कराते हुए कहते हैं ये मुल्ला-मलवाने (दिनी इल्म का दिखावा करने वाले) राज़-ए-हक़ीक़त क्या जानें। हालांकि तमाम सलासिल-ए-तय्यिबा (कादिरिया, चिश्तिया, सुहरवर्दिया, नक्शबंदिया) सब मुत्तफ़िक़ (एक) हैं कि:

"तरीक़त अज़ शरीयत नीस्त बेरून।"

यानी, तरीक़त शरीयत से बाहर नहीं। बा-हुस्न-ए-यक़ीन कीजिए कि शरीयत के बग़ैर तरीक़त, हक़ीक़त-ओ-मारिफ़त का कोई वजूद नहीं। शरीयत दूध है और तरीक़त, मारिफ़त-ओ-हक़ीक़त उस से हासिल कर्दा मक्खन और घी है। इसलिए भी इस धोखे में न आना कि शरीयत-ओ-तरीक़त दो अलहदा चीज़ें हैं। आम तौर पर जाहिल पीर और बे-अमल फ़क़ीर इसी बला में घुलते हैं और इस बला-ए-अज़ीम के ज़रिए दुनिया में लूट-मार कर रहे हैं। यही वजह है कि ऐसे पीरों-फ़क़ीरों को उलमा-ए-किराम से कोई मुहब्बत नहीं होती। ख़ुद भी और उनके जाहिल मुरीदीन भी उलमा-ए-किराम से नफ़रत करते नज़र आते हैं।

(फ़ायदा): सच्चे और सच्चे! औलिया-ए-किराम वही उलमा-ए-इज़ाम हैं जो अहल-ए-इल्म में। जाहिल कभी वली-अल्लाह नहीं बन सकता। अगर किसी जाहिल को अल्लाह त'आला अपना वली बनाना चाहता है, तो पहले उसे आलिम बनाता है, फिर वली-अल्लाह। यही वजह दौर-ए-साबिक़ में ही उलमा को औलिया समझा जाता था। वजह है कि उनके अलक़ाब भी उलमा जैसे थे, मसलन मुल्ला जामी, मौलाना रूमी वग़ैरा।

इज़ाला-ए-वहम:

बाज़ जुहाला, बल्कि ख़ुद को समझदार कहलवाने वालों का ख़्याल है कि उलमा व फ़ुक़हा अहल-ए-तरीक़त-ओ-मारिफ़त नहीं। ये उनकी जहालत व

सफ़ाहत है। हक़ीक़त-बीन निगाह से देखा जाए तो हक़ीक़ी अहल-ए-मारिफ़त बा-अमल उलमा व फ़ुक़हा ही हैं।

इमाम-ए-आज़म अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु):

उलमा व फ़ुक़हा के सरदार, सैय्यिद-उल-आइम्मा, इमाम अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) के मुताल्लिक़ आइम्मा-ए-शाफ़िईया (रहमहुमुल्लाह त'आला) फ़रमाते हैं कि इमाम-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) के मादारिक ऐसे दक़ीक़ हैं जिन को अकाबिर औलिया ही पहचानते हैं। नीज़ औलिया-ए-किराम फ़रमाते हैं कि इमाम-ए-आज़म व इमाम अबू यूसुफ़ (रज़ियल्लाहु त'आला अन्हुमा) सरदारान-ए-अहल-ए-कश्फ़-ओ-मुशाहिदा हैं। (फ़तावा रज़विया शरीफ़, जिल्द 2, सफ़हा 62 से 65, मत्बुआ निज़ामिया लाहौर)।

उलमा-ए-किराम ही औलिया-ए-इज़ाम हैं:

इमाम-ए-आज़म अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की विलायत मुसल्लम है। आप न सिर्फ इल्म-ए-शरीअत के बह्र-ए-ज़ख़ीर थे, इल्म-ए-तरीक़त-ओ-मारिफ़त के भी शहंशाह थे। अवाम की निगाहों में मेयार-ए-विलायत करामत है, अगरचे ये मेयार ग़लत है, बल्कि विलायत का मेयार इत्तिबा-ए-शरीअत है। इस के बावजूद इमाम-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) की तरह दूसरे फ़ुक़हा व उलमा से भी करामात का सुदूर हुआ। इस मौज़ू को पुख़्ता करते हुए अहल-ए-इल्म दलील देखते हैं

अहादीस शरीफ़ में है:

1. **अब्दुल मुत्तलिब बिन रबीआ (रज़ियल्लाहु त'आला अन्हु)** से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया: "जिस ने अच्छी तरह वुज़ू किया, तो उसके गुनाह उसके जिस्म से निकल जाएंगे, यहां तक कि उसके नाख़ूनों के नीचे से निकल जाएंगे।" (सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम)।

2. **अमीर-उल-मोमिनीन उस्मान (रज़ियल्लाहु अन्हु)** से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया: "जब मुस्लिम या मोमिन वुज़ू में अपना चेहरा धोता है, तो उसके चेहरे से हर वो गुनाह निकल जाता है जिस की तरफ़ उस ने अपनी दोनों आंखों से देखा हो। पानी के साथ या आख़िरी क़तरे के साथ। जब वो अपने दोनों हाथ धोता है, तो जो गुनाह उस ने अपने हाथों से किए, वो पानी के साथ या पानी के आख़िरी क़तरे के साथ निकल जाते हैं। और जब वो अपने पैर धोता है, तो उसके पैरों के गुनाह पानी के साथ या पानी के आख़िरी क़तरे के साथ निकल जाते हैं। यहां तक कि वो गुनाहों से पाक-ओ-साफ़ हो जाता है।" (सहीह मुस्लिम)।

(फ़ायदा): अहादीस की रोशनी में साबित हो गया कि वुज़ू से गुनाह धुल कर मुशाहिदा में आते हैं। और अस्हाब-ए-मुशाहिदा अपनी आंखों से वुज़ू के पानी से लोगों के गुनाहों को धुलते हुए देखते हैं। और यही वजह है कि अहल-ए-शुहूद के इमाम अबू हनीफ़ा ने फ़रमाया कि मुस्तअमल पानी नजासत-ए-मुग़ल्लज़ा है, क्योंकि वो उस पानी को गंदगियों में मलव्वस देखते थे। तो ज़ाहिर है कि वह देखते हुए उस के इलावा और क्या हुक्म लगा सकते थे।

इमाम शाअरानी ने मीज़ान-उश-शरीअत-उल-कुबरा में फ़रमाया: "मैं ने सैय्यिदी अली अल-ख़व्वास (जो बड़े शाफ़िई आलिम थे) को फ़रमाते सुना कि इमाम अबू हनीफ़ा के मुशाहिदात इतने दक़ीक़ हैं जिन पर बड़े-बड़े साहिबान-ए-कश्फ़ औलिया-अल्लाह ही मुत्तालि हो सकते हैं।" फ़रमाते हैं: *"इमाम अबू हनीफ़ा जब वुज़ू में इस्तेमाल शुदा पानी देखते, तो उस में जितने सग़ाइर ओ कबाइर, मकरूहात होते, उन को पहचान लेते थे। इसलिए जिस पानी को मुकल्लफ़ ने इस्तेमाल किया हो, उस के तीन दर्जात आप ने मुक़र्रर फ़रमाए:

1. **नजासत-ए-मुग़ल्लज़ा**: क्योंकि इस अम्र का इह्तिमाल है कि मुकल्लफ़ ने गुनाह-ए-कबीरा का इर्तिकाब किया हो।
2. **नजासत-ए-मुतवस्सिता**: क्योंकि इह्तिमाल है कि मुकल्लफ़ ने सग़ीरा का इर्तिकाब किया हो।

3. **ताहिर ग़ैर-ए-मुतह्हिर**: क्योंकि इह्तिमाल है कि उस ने मकरूह का इर्तिकाब किया हो।"

इन के बाज़ मुक़ल्लिदीन समझ बैठे कि ये अबू हनीफ़ा के तीन अक़्वाल हैं एक ही हालत में, हालांकि अम्र-ए-वाक़िआ यह है कि ये तीन अक़्वाल गुनाहों की अक़्साम के ऐतिबार से हैं, जैसा कि हम ने ज़िक्र किया। और इसी किताब में है कि इमाम अबू हनीफ़ा और उन के अस्हाब ने नजासत को मुग़ल्लज़ा और मुख़फ़्फ़फ़ा में तक़सीम किया है, क्योंकि मआसी कबाइर होंगे या सग़ाइर।

और मैं ने सैय्यिदी अली अल-ख़व्वास को फ़रमाते सुना: "अगर इंसान पर कश्फ़ हो जाए, वो तहारत में इस्तेमाल किए जाने वाले पानी को इंतिहाई गंदा और बदबूदार देखेगा, और वो इस पानी को इसी तरह इस्तेमाल न कर सकेगा जैसे उस पानी को इस्तेमाल नहीं करता है जिस में कुत्ता या बिल्ली मर गया हो।" मैं ने उन से कहा: "इस से मालूम हुआ कि अबू हनीफ़ा और अय्यूब यूसुफ़ अहल-ए-कश्फ़ से थे, क्योंकि ये मुस्तअमल की नजासत के क़ाइल थे।" तो उन्होंने कहा: "जी हां, अबू हनीफ़ा और उन के साहिब बड़े अहल-ए-कश्फ़ थे। जब वो इस पानी को देखते जिस को लोगों ने वुज़ू में इस्तेमाल किया होता, तो वो पानी में गिरते हुए गुनाहों को पहचान लेते थे, और कबाइर के धोने को सग़ाइर के धोने से अलग मुमताज़ कर सकते थे। और सग़ाइर के धोने को मकरूहात से, और मकरूहात के धोने को ख़िलाफ़-ए-औला से मुमताज़ कर सकते थे, इसी तरह जैसे महसूस अश्या एक दूसरे से अलग मुमताज़ होती हैं।"

फ़रमाया: "हमें यह रिवायत पहुंची है कि एक मर्तबा आप जामिआ कूफ़ा के तहारत-ख़ाने में दाख़िल हुए, तो देखा कि एक जवान वुज़ू कर रहा है और पानी के क़तरात उस से गिर रहे हैं। तो फ़रमाया: 'ऐ मेरे बेटे! वालिदैन की ना-फ़रमानी से तौबा कर।' उस ने फ़ौरन कहा: 'मैं ने तौबा की।' एक दूसरे शख़्स के पानी के क़तरात देखे, तो फ़रमाया: 'ऐ मेरे भाई! अज़-ज़िना से तौबा कर।' उस ने कहा: 'मैं ने तौबा की।' एक और शख़्स के वुज़ू का पानी गिरता

हुआ देखा, तो उस से फ़रमाया: 'शराब-नोशी और फ़ुह्श गाने गाने से तौबा कर।' उस ने कहा: 'मैं ने तौबा की।'"

इसी में हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा के बाज़ मुक़ल्लिदीन से मर्वी है कि उन्होंने उन वुज़ू-ख़ानों के पानी से वुज़ू को मना किया है जिन में पानी जारी न हो, क्योंकि उस में वुज़ू करने वालों के गुनाह होते हैं। और उन्होंने हुक्म दिया कि वो नहरों, कुएं और बड़े हौज़ों के पानी से वुज़ू करें। और सैय्यिदी अली अल-ख़व्वास, बावजूद शाफ़िई होने के, मसाजिद के तहारत-ख़ानों में अक्सर औक़ात वुज़ू नहीं करते थे और फ़रमाते थे: "यह पानी हम जैसे लोगों के जिस्मों को साफ़ नहीं करता है, क्योंकि यह उन गुनाहों से आलूदा है जो इसमें मिल गए हैं।" और वो गुनाहों के धोने में यह फ़र्क़ भी कर लेते थे कि यह हराम का है या मकरूह का या ख़िलाफ़-ए-औला का। और एक दिन मैं उन के साथ मदरसा-तुल-अज़हर के वुज़ू-ख़ाने में दाख़िल हुआ, तो उन्होंने इरादा किया कि हौज़ से इस्तिंजा करें, तो उस को देख कर लौट आए। मैं ने दरयाफ़्त किया: "क्यों?" तो फ़रमाया: "मैं ने इसमें एक गुनाह-ए-कबीरा का धोना देखा है जिस ने इसे मुतग़य्यिर कर दिया है।" और मैं ने उस शख़्स को भी देखा था जो हज़रत शैख़ से क़ब्ल वुज़ू-ख़ाने में दाख़िल हुआ था। फिर मैं उस के पीछे-पीछे गया और उस को हज़रत शैख़ ने जो कहा था, उस की ख़बर दी। उस ने तस्दीक़ की और कहा: "मुझ से ज़िना का वाक़िया हुआ था, और हज़रत शैख़ के हाथ पर ताइब हुआ।" (फ़तावा रज़विया शरीफ़)।

(फ़ायदा): इसी तरह की बेशुमार करामात फ़ुक़हा व उलमा से सादिर हुई हैं। इसी लिए यह वहम ही ग़लत है कि फ़ुक़हा व उलमा को विलायत से क्या तअल्लुक़ (मआज़ अल्लाह)! बल्कि हदीस शरीफ़ है:

"फ़क़ीह वाहिद अशद्दु अला-शैतान मिन अल्फ़ आबिद।"

(एक फ़क़ीह (आलिम) शैतान पर हज़ार आबिद से भारी और सख़्त है।)

आम तौर पर आबिदीन लोग ग़ैर फ़क़ीह होते हैं, और अक्सर फ़ुक़हा व उलमा न सिर्फ आलिम होते हैं, बल्कि वो आबिद भी होते हैं। तअज्जुब है

जहालत-ए-अवाम बल्कि ख़वास पर कि आबिदीन की करामात के तो क़ाइल हैं, लेकिन अहल-ए-इल्म के लिए मानने को तैयार नहीं।

(लतीफ़ा): यह गुफ़्तुगू इबादत-गुज़ार औलिया की है, और दौर-ए-हाज़िर के मुद्दईयान-ए-विलायत तो अक्सर इबादत से महरूम, बल्कि अक्सर फ़िस्क-ओ-फुजूर में ग़र्क़।

बा-अमल उलमा व फ़ुक़हा:

हक़ीक़त यह है कि हक़ीक़ी और असली मुरशिदान-ए-किराम उलमा व फ़ुक़हा-ए-इज़ाम ही हैं, क्योंकि ये हज़रात वारिस-उल-अंबिया, बिल-ख़ुसूस इमाम-उर-रुसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के जानशीन हैं। हज़ूर नबी-ए-पाक (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इल्म व उलमा (बा-अमल) की बहुत बड़ी सिताइश व सना और तारीफ़ फ़रमाई है (तफ़सील के लिए देखिए फ़क़ीर का रिसाला फ़ज़ीलत-ए-इल्म-ओ-उलमा), बल्कि उन की तहक़ीर और तख़फ़ीफ़ और गुस्ताख़ी करने वाले को मुनाफ़िक़ बताया। चुनांचे हदीस शरीफ़ में है:

"सलासा ला यस्तख़िफ़्फ़ बि-हक़्क़िहिम इल्ला मुनाफ़िक़: ज़ू-श-शैबा फिल-इस्लाम, व ज़ू-ल-इल्म, व इमामुन मुक़्सित।"

(तीन हैं जिन का हक़ कम न समझेगा मगर मुनाफ़िक़: (1) इस्लाम में बुढ़ापे वाला, (2) आलिम-ए-दीन, (3) बादशाह-ए-इस्लाम आदिल।)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मुजद्दिद-ए-मा-अरबा-अश्तर (रहमतुल्लाह अलैहि) ने फ़रमाया कि ऐसा शख़्स क़ाबिल-ए-तअज़ीर (सजा के काबिल) है (फ़तावा रज़विया, मत्बुआ निज़ामिया, सफ़हा 645, जिल्द 13, लाहौर)।

इंतिबाह:

दौर-ए हाज़िर में जितना तबक़ा उलमा-ए-कराम से नफ़रत व हिक़ारत की ज़द में है, किसी और तबक़े में ऐसा नहीं। अगर है तो बहुत

ही कम। तजरबा कर लीजिए कि आला से अवानी लोगों तक मुल्ला मौलवी को ज़िल्लत का सामना है। यह शैतान की तहरीक अंग्रेज़ों ने अपनाई और अवाम व ख़्वास को ज़हर में मीठा मिला कर अमली तौर पर ऐसी रासिख़ कर दी कि अब अवाम व ख़्वास की निगाहों में मुआशरा के लिए उलमा व फ़ुक़हा को न मालूम क्या से क्या समझा जा रहा है।

लेकिन अल्हम्दुलिल्लाह, उलमा-ए हक़ यह सब कुछ गुज़ारा कर के दीन-ए मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नश्र व इशाअत की लगन में मगन हैं और ख़ुश-सख़्त हैं। वो अवाम व ख़्वास अहले इस्लाम जो उलमा बा-अमल से वाबस्ता और उनके नियाज़मंद हैं, बल्के यह लोग मुबारक-बाद के मुस्तहिक़ हैं, जो खुद और अपनी औलाद को जाहिल व बे-अमल पीरों से बचा कर बा-अमल उलमा-ए-कराम के मुरीद व मुंतसिब (निस्बत रखने वाला) हैं।

उलमा-ए सू (दुनियादार उल्मा):

उलमा व फ़ुक़हा से मेरी मुराद बा-अमल और सुन्नी अल-अक़ीदा हैं, न कि बद-मज़हब और बे-अमल बद-अक़ीदा। तो वैसे भी मरबूद से भी बद-तर है। इसीलिए ऐसे को पीर-ओ-मुर्शिद बनाना तो दूर करार, उसकी सोहबत बल्के मेल-मिलाप सीधा जहन्नम रसीद करेगा। और सुन्नी है अमल से भी बैअत न जाइज़ है, अगर चे आलिम हो। इसलिए कि बे-अमल आलिम शैतान का आला-ए कार है। ऐसे उलमा की क़ुरान व अहादीस में सख़्त मज़म्मत (खाराबी बयान) की गई है। यहां पर फ़क़ीर सिर्फ एक मक़्तूब इमाम रब्बानी सैयदना मुजद्दिद अल्फ़ सानी (रदियल्लाहु अन्हु) पर इक्तिफा करता है। आप (रदियल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं:

"एक अज़ीज़ ने शैतान को फ़ारिग़ बैठा और गुमराह करने और हक़ से हटाने के काम से मुतमइन पाया तो अज़ीज़ ने उससे वजह पूछी तो शैतान लाईन ने कहा:

'इस वक्त के उलमा इस काम में मेरे बड़े मददगार हैं और मुझे इस काम में उन्होंने फ़ारिग़ कर दिया है।'" *(मक़्तूबात, सफा 46, जिल्द 1)*

फ़ायदा:

फ़क़ीर ने उलमा से वाबस्तगी से तहरीस व तर्ग़ीब दिलाई है, इसका यह मतलब नहीं कि तमाम उलमा बराबर होते हैं। बल्के मेरा मतलब उलमा बा-अमल और साहिबान-ए मअरिफ़त ही हैं। वरना उलमा-ए सू अक़ीदा के लिहाज़ से या किरदार के लिहाज़ से भटके हुए हैं। उनसे तो कोसों दूर भागना ज़रूरी है।

ऐ बरादर!

दूर शो अज़ यार-ए बद, यार-ए बद बदतर अस्त अज़ मार-ए बद।

तर्जुमा:

ऐ भाई! यार-ए बद से दूर हो, वो इसलिए कि यार-ए बद बुरे सांप से भी बद-तर होता है। :

किस आलीम की सोहबत इख़्तियार करना चाहिए

रसूलुल्लाह सललल्लाहो अलैहि वसलल्लम ने इरशाद फरमाया कि ऐसे आलिम की सोहबत में बैठो जो पांच चीज़ों को छुड़ा कर पांच चीजों की तरगीब देता हो:

1. दुनिया की रगबतसे निकाल कर जुहद की तरगीब दे
2. रिया से निकाल कर इख़लास की तालीम दे,
3. गुरूर से छड़ा कर तवाजोअ की की तरगीब दे
4. काहिली और सुस्ती से बचा कर पिन्द व नसीहत करने की तरगीब दे
5. जिहालत से निकाल कर इल्म की तरगीब दे। *(गुनियतुत्तालिबी, बाब 17)*

अल्लाहुम्मा इज'अलना मिन अत-तव्वाबीन, वज'अलना मिन अल-मुततह्हिरीन, वज'अलना मिन अल्लज़ीना ला ख़ौफ़ुन अलैहिम व ला हुम यहज़ून।

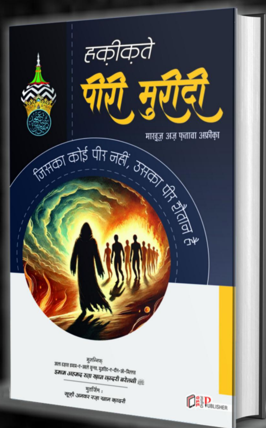
(ऐ अल्लाह! हमें तौबा करने वालों में से बना, हमें पाक रहने वालों में से बना, और हमें उनमें से बना जिन पर न कोई ख़ौफ़ है और न वो ग़मगीन होते हैं।)

अल-फ़क़ीर अबी अस-सालेह मुहम्मद फैज़ अहमद ओवैसी कादरी रज़वी, ग़ुफ़्रल्लाह, बहावलपुर, पाकिस्तान।

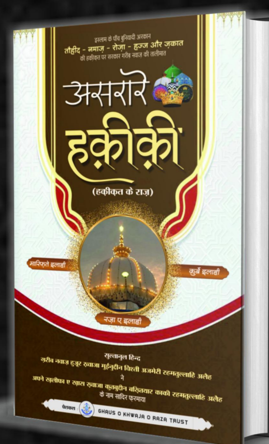
1397 हिजरी---

नई कुतूब (2025)

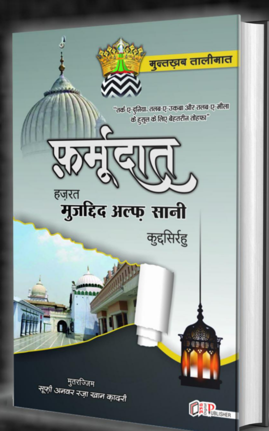
GKR Digital PUBLISHER













Comming Soon More New Books

www.ghausokhwajaorazatrust.com